इकाई 8: असमिया लोकसंस्कृति का सामान्य परिचय

इकाई की रूपरेखा:

8. 1 उद्देश्य
8. 2 प्रस्तावना
8. 3 संस्कृति की परिभाषा
8. 4 संस्कृतियों के प्रकार
8. 5 लोकसंस्कृति का वर्गीकरण
8. 6 असम की लोक-सांस्कृतिक परिचय
8. 7 असम में लोकसंस्कृति का हालिया संदर्भ
8. 8 सारांश
8. 9 प्रगतिविवरण (केवल रूपरेखा)
8. 10 अधिक जानने के लिए पढ़ें
8. 11 अभ्यासप्रश्न

8.1 उद्देश्य:

इस इकाई के अध्ययन से अध्येता—

- संस्कृति की परिभाषा और उसके मूल तत्वों को समझ पाएँगे।
- विभिन्न प्रकार की संस्कृतियों का वर्गीकरण को जानेंगे।
- लोक संस्कृति की विशेषताओं और प्रकारों का अध्ययन करेंगे।
- असम की लोक-सांस्कृतिक पहचान को समझेंगे।
- असम की लोक संस्कृति पर बाहरी प्रभावों का विश्लेषण कर सकेंगे।
- असम में लोक संस्कृति में आए परिवर्तनों को पहचान पाएँगे।

8.2 प्रस्तावना:

संस्कृत के 'कृ' धातु में 'सम्' उपसर्गऔर'क्तिन' प्रत्यय के योग से 'संस्कृति' शब्द बना है। व्युत्पत्ति की दृष्टि से 'संस्कृति'परिष्कृत कार्यअथवा उत्तम स्थिति का बोध कराता है। वास्तव में 'संस्कृति' शब्द'संस्कार'से विकसित है, जिसका अर्थ है-परिष्कार, शुद्धि या उन्नयन।ऋग्वेद, यजुर्वेदतथाउपनिषदजैसे प्रचीनतम गंर्थों में 'संस्कार', 'संस्कृत' या

परिष्कार से संबंधित धारणाएँ प्राप्त होती हैं, जो आगे चलकर 'संस्कृति' के व्यापक अर्थ का आधार बनीं।इन ग्रंथों में मानव केआचार, विचार, ज्ञान, तप, यज्ञ, और नैतिक जीवनपर विशेष बल दिया गया है-जो भारतीय 'संस्कृति' के अंग माने जाते हैं।

अंग्रेजी में'संस्कृति' शब्द के समतुल्य रूप में *Culture*शब्द का प्रयोग किया जाता है। *Culture*शब्द उत्पत्ति लैटिन शब्द*Colere*या*Cultura*से मानी जाती है, जिसका अर्थ है 'खेती करना' या 'पालन-पोषण करना ।' सन् 1865 में ब्रिटिश मानवशास्त्रीएडवर्ड बी. टायलर (Edward B. Tylor)ने सबसे पहले*Cultura*शब्द का प्रयोग आधुनिक अर्थों में किया था। उन्होंने संस्कृति को मनुष्य द्वारा अर्जित ज्ञान, आस्था, कला, नैतिकता, कानून, परंपरा तथा अन्य क्षमताओं और आदतों का समग्र रूप बताया।

हिन्दी में 'संस्कृति' शब्द'संस्कार'से संबद्ध है। 'संस्कृति' का तात्पर्य उस प्रक्रिया से है, जिसके माध्यम से मानव अपने व्यवहार, विचार, आचार तथा जीवन-मूल्यों का निरंतर परिष्कार करता है। अर्थात्, जो सुधारा, निखारा या उन्नत किया गया हो, वही संस्कृति कहलाती है। बार-बार किए जाने वाले व्यवहार, कर्म या अभ्यास को 'साधना' कहा जा सकता है, और उस साधना को निरंतर सुधारने, परिष्कृत करने की प्रक्रिया को 'संस्कृति' कहा जाता है। संस्कृति किसी समाज या जाति कीआत्मा और पहचानहोती है। यह केवल भौतिक जीवन की अभिव्यक्ति नहीं, बल्कि मानव समाज के मानसिक, नैतिक, सौंदर्यबोध और आध्यात्मिक मूल्यों का दर्पण होती है।

लोक या किसी जन समाज विशेष की संस्कृति लोकसंस्कृतिकहलाती है। यह किसी समाज के सामान्य जन (लोक) के जीवन, परंपराओं, विश्वासों और व्यवहारों में स्वाभाविक रूप से विकसित होती है। यह पीढ़ी-दर-पीढ़ी मौखिक रूप से संचरित होती है और उसमें लोकजीवन की सहजता, सरलता तथा सामूहिकता झलकती है। यह जनसाधारण के जीवन का वह जीवंत रूप हैजिसमें उनके अनुभव, आस्था, परंपरा और जीवन-शैली का स्वाभाविक एवं सजीव प्रतिबिंब मिलता है।

लोक संस्कृतिकिसी भी समाज की जड़ों से जुड़ी होती है । यह उस समाज की सामूहिक चेतना, भावनाओं, परंपराओं, रीति-रिवाजों, लोककथाओं, लोकगीतों और लोककला का समन्वय होती है। लोक संस्कृति किसी जाति विशेष कासौंदर्य और विशिष्टताका समन्वित रूप होती है। जब तक किसी समाज में यह सौंदर्य और सांस्कृतिक संतुलन विद्यमान रहता है, तब तक वह अपनी पहचान और अस्तित्व को बनाए रख सकता है।

इस अध्याय का उद्देश्यपूर्वोत्तर भारतकी लोक-सांस्कृतिक विशेषताओं का अध्ययन करना है। इसके अंतर्गत विशेषकरसमृद्ध परंपराएँ, नृत्य, संगीत, लोककथाएँ, पर्व-उत्सवआदि से परिपूर्ण असम की लोक-संस्कृतिको उसके ऐतिहासिक औरपरिवर्तनशील सामाजिक परिप्रेक्ष्यमें देखने का प्रयास किया जाएगा। समय के साथ आए सामाजिक,

आर्थिक और तकनीकी परिवर्तनों ने असम की लोक-संस्कृति को अनेक रूपों में प्रभावित किया है। अतः इस अध्याय में असम की लोक-संस्कृति के स्वरूप, उसकी निरंतरता तथा आधुनिक समय में आएपरिवर्तनों की दिशा और प्रभावोंपर भी विस्तारपूर्वक चर्चा करने का प्रयास किया गया है।

8.3 संस्कृति की परिभाषा

'संस्कृति' शब्द का अर्थ अत्यंत व्यापक और बहुआयामी है। यह केवल मनुष्य के बाह्य जीवन का परिचायक नहीं, बल्कि उसकेमानसिक, नैतिक, बौद्धिक, सामाजिक और आध्यात्मिक विकासकी अभिव्यक्ति भी है। संस्कृति का समाज से गहरा संबंध है । समाज ही संस्कृति का जन्मदाता, वाहक-संवाहक और संरक्षक होता है। भारतीय एवं पाश्चात्य विद्वानों ने संस्कृति को विभिन्न रूपों में परिभाषित करने का प्रयास किया है । उनमें से कुछ परिभाषाएँ निम्नांकित हैं -

डॉ. श्यामाचरण दुबे -"सीखे हुए व्यवहार प्रतिमानों की उस समग्रता को जो किसी समूह को विशिष्टता प्रदान करती है, संस्कृति की संज्ञा दी जा सकती है।"

डॉ. भगवान दास -"मानसिक क्षेत्र में मनुष्य की प्रत्येक उन्नति संस्कृति का अंग है। इसमें धर्म, दर्शन, सभी ज्ञान विज्ञान और कलाएँ तथा सामाजिक और राजनीतिक संस्थाओं एवं प्रथाओं का समावेश होता है।"

श्री के.एम .मुंशी के अनुसार - "संस्कृति जीवन के प्रति हमारा दृष्टिकोण है।"

मैथ्यूअर्नोल्ड- "Culture is the pursuit of sweetness and light." अर्थात 'मधुरता और प्रकाश की विशेषताहीसंस्कृतिहै।

समाजशास्त्रीपितिरिमसोरोकिनऔररॅबर्ट मैकाइवर-"संस्कृतिमानवजातिकानैतिक, आध्यात्मिकऔर बौद्धिकविकासहै।"

डेविड बिंडी- "संस्कृति एक भौगोलिक वातावरण के भीतर मानव प्रकृति का विकास है।" अर्थात्, संस्कृति उस वातावरण में मनुष्य की प्रतिक्रिया और अनुकूलन का परिणाम है, जहाँ वह रहता है। यह मानव और उसके परिवेश के बीच सतत संवाद की परिणति है।

ब्रोनिस्लाव मालिनोवस्की-"Culture may be define as a system of derive needs and an organizes system of powerful activities" अर्थात्, संस्कृति मानव की उत्पन्न आवश्यकताओं तथा उन्हें पूरा करने के संगठित और सशक्त साधनों का तंत्र है।

अल्फ्रेड क्रोबर-"Culture is the special and exclusive product of man and is their distinctive quality in cosmos." अर्थात्, संस्कृति मनुष्य की विशेष और विशिष्ट रचना है, जो उसे ब्रह्मांड में अन्य प्राणियों से भिन्न बनाती है।

संस्कृति के संबंध में व्यापक रूप से स्वीकृत आधुनिक परिभाषा एक मानवविज्ञानी द्वारा इस प्रकार दी है – “Culture is a set of rules or standards which when acted upon by the members of a society, produce behavior that falls within a range of variance the members consider proper and acceptable.” अर्थात् "संस्कृति कुछ निश्चितसामाजिक नियमों एवं मानकों का ऐसा समन्वय है, जिसे किसी समाज विशेष के सभी सदस्यों केद्वारा स्वीकृत और अनुकरणीय विभिन्न आचरणों के रूप में ग्रहण किया जाता है। यही आचरण संस्कृति कहलाता है।"

जॉन जे. होनिगमैन (John J. Honigman) की दृष्टि में संस्कृति का परिभाषित क्षेत्र बहुत ही व्यापक है। मानव द्वारा सृजित कला, साहित्य, संगीत, नृत्य आदि से लेकर धार्मिक विश्वास और अनुष्ठान तक सभी संस्कृति के अंग हैं।

निष्कर्षत: यह कहा जा सकता है कि संस्कृति केवल सभ्यता का पर्याय नहीं, बल्कि मनुष्य कीसंपूर्ण जीवन-प्रणालीहै। यह उसकी सोच, आचरण, विश्वास, सृजनशीलता और सामूहिक चेतना का समन्वय है। संस्कृति मनुष्य को न केवल सामाजिक बनाती है, बल्कि उसे संवेदनशील, सृजनशील और आध्यात्मिक भी बनाती है।

8.4 संस्कृति के प्रकार:

संस्कृति मानव समाज की समस्त परंपराओं एवं आचरणों का समुच्चय है इसलिए इसका समाज से अलग विश्लेषण संभव नहींहै। संस्कृति की कुछ नैतिक विशेषताएँ होती हैं:-

1. संस्कृति सामाजिक है ।
2. संस्कृति सदैव आदर्शों की अनुयायी होती है ।
3. संस्कृति मानव के सामाजिक परंपराओं का प्रतिबिंब है ।
4. संस्कृति सामान्य मानवीय आवश्यकताओं की पूर्ति करती है ।
5. संस्कृति मानव क्षमताओं की अभिव्यक्ति है ।
6. संस्कृति मानवीय समाज का आदर्श है ।

उपरोक्त विशेषताओं के आधार पर, संस्कृति को दो मुख्य श्रेणियों में विभाजित किया जा सकता है:-

(क)भौतिक या पार्थिव संस्कृति

(ख)अभौतिक या अपार्थिव संस्कृति

8.4.1 भौतिक या पार्थिवसंस्कृति :

भौतिक संस्कृति में वे सभी मूर्त वस्तुएँ सम्मिलित होती हैं, जिन्हें मनुष्य निर्मित करता है और जिनसे वह अर्थ एवं उपयोगिता जोड़ता है, जैसे-प्रौद्योगिकी, वास्तुकला और कला। इसमें मानव जीवन के खेल-कूद, कला-कौशल, रहन-सहन आदि से जुड़े समस्त भौतिक पक्ष समावेश होते हैं। सामान्यतः भौतिक संस्कृति को परिभाषित करना, उसका विश्लेषण करना तथा उसका उपयोग करना अपेक्षाकृत सरल होता है। यह समाज के सदस्यों द्वारा निर्मित होकर उनके जीवन को आकार प्रदान करती है; जैसे- उपकरण, मशीनें, घर, वस्त्र, कलाकृतियाँआदि। उदाहरणस्वरूप, किसी देश की वास्तुकला, परिवहन, व्यवस्था और प्रौद्योगिकी भौतिक संस्कृति के प्रमुख अंग हैं।

8.4.2 अभौतिक संस्कृतिया अपार्थिव संस्कृति:

अभौतिक संस्कृति में वे अमूर्त विचार शामिल हैं, जो भौतिक वस्तुओं में सन्निहित नहीं हैं, जैसे कि विश्वास, मूल्य, श्रद्धा, सामाजिक नियम, मानदंड, भाषा आदि। यह समाज के सदस्यों के व्यवहार और दृष्टिकोण को प्रभावित करती है। उदाहरण के लिए, किसी देश की भाषा, धर्म, कला, संगीत, और रीति-रिवाज सभी अभौतिक संस्कृति का हिस्सा हैं। यह संस्कृति भौतिक संस्कृति के नियोजित प्रबंधन और उपयोग में मदद करती है। वास्तव में, संस्कृति का जन्म और विकास प्रारंभिक अवस्था से अमूर्त रूपों की अनुभूति के माध्यम से होता है।

संस्कृति की गुणात्मक और विशेषताओं के अनुसार इसे निम्नलिखित तीन रूपों में विभाजित किया जा सकता है:

(क) अभिजात संस्कृति,

(ख) लोक संस्कृति और

(ग) जनजातीय संस्कृति।

(क) अभिजात संस्कृति:

अभिजात संस्कृति को कुलीन या उच्च वर्ग की संस्कृति भी कहा जाता है। यह समाज के प्रभावशाली और शक्तिशाली लोगों द्वारा अपनाई जाने वाली संस्कृति को संदर्भित करती है। अभिजात संस्कृति अक्सर विशिष्ट रुचियों और प्राथमिकताओं को दर्शाती है, जो आम जनता से अलग होती हैं। यह अक्सर कला, साहित्य, संगीत, शिक्षा और सामाजिक रीति-रिवाजों जैसे क्षेत्रों में विशिष्ट रुचियों को दर्शाती है। शास्त्रीय संगीत,

ओपेरा, पेंटिंग और मूर्तिकला जैसे विशिष्ट कला रूप अभिजात संस्कृति से जुड़े हैं। विशिष्ट विश्वविद्यालयों और कॉलेजों से शिक्षा प्राप्त करना अभिजात संस्कृति का हिस्सा माना जाता है और साथ में विशिष्ट सामाजिक समारोहों और कार्यक्रमों में भाग लेना भी अभिजात संस्कृति का हिस्सा माना जाता है

(ख) लोक संस्कृति:

लोक संस्कृति को संस्कृति के व्यापक परिप्रेक्ष्य में विशेष स्थान प्राप्त है। इसके संदर्भ में अंग्रेजी केFolk Culture या कभी-कभी Folk Lore जैसे शब्दों का प्रयोग किया जाताहै। लोक संस्कृति जनसाधारण के जीवन-प्रवाह में अभिव्यक्त होने वाले रीति-रिवाज, गीत, नृत्य, कहानियाँ, किंवदंतियाँ, खान-पान, आभूषण, पूजा, कृषि, लोक मान्यताएँ, लोक विश्वास आदि का समन्वित रूप है, जो लोगों की जीवन शैली को व्यक्त करता है। यहकेवल ग्रामीण समाज की जीवन-पद्धति की अभिव्यक्ति नहीं,बल्कि समस्त जनजीवन के विविध रूपों का प्रतिबिंब होता है । अत:मानव की कला और विज्ञान के विकास में लोक संस्कृति के महत्व को समझना जरूरी है।

(ग) जनजातीय संस्कृति

जनजातीय संस्कृति को आदिवासी संस्कृति भी कहा जाता है। इसमें विभिन्न जनजातीय समुदायों के रीति-रिवाज, नृत्य, परंपराएँ, कला, संगीत, भाषाएँ और जीवन-शैली सम्मिलित होती हैं। इन समुदायों में पीढ़ी-दर-पीढ़ी चली आ रही परंपराएँ और आचार-व्यवहार उनके जीवन का अभिन्न अंग होते हैं । जनजातीय कला और शिल्प-जैसे चित्रकला, मृद्भांड निर्माण, बुनाई,काष्ठ-कला, विविध नक्काशी आदि-उनकी सांस्कृतिक पहचान के महत्त्वपूर्ण घटक हैं। इसी प्रकारधार्मिक एवं सामाजिक अवसरों पर प्रस्तुत किए जाने वाले जनजातीय संगीत और नृत्य कलाउनकी संस्कृति का सजीव, प्रभावशाली और अभिव्यंजक पक्ष हैं।

स्मरणीय बिंदु :

1. संस्कृति' शब्द संस्कृत की 'कृ' धातु में 'सम्' उपसर्ग और 'क्तिन' प्रत्यय से बना है जिसका मूल अर्थपरिष्कार, शुद्धि और उन्नयनहै, जो 'संस्कार' से विकसित हुआ है।
2. वेदों और उपनिषदों में संस्कृति के तत्व-आचार, विचार, ज्ञान, तप और नैतिक जीवन-मौजूद हैं।
3. संस्कृति मनुष्य के व्यवहार, विचार और जीवन-मूल्यों के निरंतर परिष्कार की प्रक्रिया है।

4. यह केवल भौतिक नहीं, बल्कि मानसिक, नैतिक, सौंदर्यात्मक और आध्यात्मिक मूल्यों का दर्पण है।
5. लोक संस्कृति जनसाधारण के जीवन, परंपराओं और विश्वासों का सजीव एवं सामूहिक रूप है।
6. संस्कृति के दो मुख्य प्रकार हैं-भौतिक (Material) औरअभौतिक (Non-material) संस्कृति।
7. व्यापक रूप से संस्कृति को **अभिजात, लोक** और **जनजातीय**-तीन रूपों में भी विभाजित किया जाता है।

8.5 लोक संस्कृति का वर्गीकरण:

लोक संस्कृति का वर्गीकरण चार प्रमुख श्रेणियों में किया जा सकता है :-

(क) मौखिक लोक साहित्य,

(ख) सामाजिक लोक प्रथा या लोकाचार,

(ग) भौतिक संस्कृति,

(घ) लोक पर्यावरण कला।

(क) मौखिक लोक साहित्य

किसी विशिष्ट जाति या समुदाय विशेष की लोक संस्कृति के विविध रूपों का दर्शन हमें लोक साहित्य में होता हैं। एक समुदाय की आदिम अवस्था से लेकर सभ्यता के उत्कर्ष तक की जनजीवन की समग्र अभिव्यक्ति लोक साहित्य में प्रतिबिंबित होती है। मौखिक परंपरा के अंतर्गत लोक कविता, लोक कथा, लोकगीत, लोक गाथा आदि सम्मिलित होते हैं ।

लोक कविता के क्षेत्र में असम की लोक संस्कृति बहुत समृद्ध है। असमिया लोक साहित्य में जनजीवन के विविध आयामों की सजीव झलक मिलती है। इसमें बिहू गीत, विवाह गीत, काहिनी गीत, वनगीत, विचित्रसाख कथाएँ, फकरा-जोजना (मुहावरे-कहावतें), आदर-व्यवहार, जन विश्वास और जनमानस की अभिव्यक्ति सम्मिलित हैं । इन सबके द्वारा हम तत्कालीन समाज के सुख-दुःख, आकांक्षा, संवेदनाएँ, अनुनय आदि की भी जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। यही विशेषता लोकसाहित्य को साहित्य के एक समृद्ध और महत्त्वपूर्ण अंग के रूप में स्थापित करती है।

(ख) सामाजिक लोकप्रथा या लोकाचार:

सामाजिक लोक प्रथा या लोकाचार की परिधि में उत्सव, अनुष्ठान, खेल-तमाशे, लोकोत्सव, लोक चिकित्सा, लोक धर्म आदिआते हैं। अभिनय, खेल-कूद, इन सभी प्रकार की सामग्री से लोक संस्कृति की पूर्णता होती है।

लोकप्रथा या लोकाचार से आशय किसी समुदाय विशेष द्वारा पीढ़ी-दर-पीढ़ी अपनाई जाने वाली सामाजिक परंपराएँ,व्यवहार, रीति-रिवाजआदि से है। ये प्रथाएँ समाज के सांस्कृतिक जीवन को व्यवस्थित करने के साथ-साथ सामूहिक पहचान को सुदृढ़ बनाती हैं। उदाहरणतः असम में बिहू पर्व के अवसर पर युवाओं का सामूहिक नृत्य-गान, बड़ों से आशीर्वाद लेना, मधुर वाणी में सबका स्वागत करना, पारंपरिक व्यंजन बनाना आदि महत्वपूर्ण लोकाचार हैं । इसी प्रकार विवाह में हल्दी-रस्म, वरमाला और लोकगीतों का गायन भी लोकप्रथा के अंतर्गत आते हैं। ये प्रथाएँ न केवल सामाजिक एकता को बढ़ाती हैं, बल्कि सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित रखने में भी सहायक होती हैं।

(ग) भौतिक संस्कृति:

भौतिक संस्कृति से आशय उन सभी दृश्यमान और स्पर्शणीय वस्तुओं से है, जिन्हें मनुष्य अपने जीवन-निर्वाह, सुविधा और सांस्कृतिक अभिव्यक्ति के लिए निर्मित करता है। इसमें आवास, वस्त्र, उपकरण, आभूषण, परिवहन के साधन, हस्तशिल्प, दैनिक उपयोग की वस्तुएँ आदि सम्मिलित होती हैं। ये किसी समाज विशेष के आर्थिक स्तर, तकनीकी विकास और जीवन-शैली का परिचायक होती है। उदाहरणतः ग्रामीण क्षेत्रों के कच्चे घर, पारंपरिक वेशभूषा, मिट्टी के बर्तन, हाथकरघे से बने वस्त्र आदि उस समाज की भौतिक संस्कृति को दर्शाते हैं। इस प्रकार भौतिक संस्कृति समाज की ठोस एवं प्रत्यक्ष अभिव्यक्ति है, जो उसकी विशिष्ट पहचान को मूर्त रूप प्रदान करती है।

(घ) लोक पर्यावरण कला:

लोक पर्यावरण कला से आशय उस पारंपरिक कलात्मक अभिव्यक्ति से है, जो स्थानीय पर्यावरण, प्रकृति और उपलब्ध संसाधनों के साथ गहरे संबंध में विकसित होती है। इसमें मिट्टी, लकड़ी, पत्ते, बाँस, पत्थर, फूलों के रंग आदि प्राकृतिक सामग्री का उपयोग करके कलात्मक वस्तुएँ और सजावट की सामग्री निर्मित की जाती हैं। यह कला न केवल लोक जावन के सौंदर्यबोध को व्यक्त करती है, बल्कि पर्यावरण के प्रति संवेदनशीलता और संतुलन का संदेश भी देती हैं । उदाहरणतः असम के गाँवों में बाँस

और मिट्टी से बने घर तथा अलंकरण लोक पर्यावरण कला के रूप हैं। इस प्रकार यह कला मनुष्य और प्रकृति के सहअस्तित्व को दर्शाती है।

स्मरणीय बिंदु :

1. लोक संस्कृति की चार मुख्य श्रेणियाँहोती हैं-मौखिक लोक साहित्य, सामाजिक लोकाचार, भौतिक संस्कृति और लोक पर्यावरण कला।
2. मौखिक लोक साहित्यमें लोकगीत, लोककथा, लोकगाथा आदि शामिल हैं, जो किसी समुदाय के जीवन, भावनाओं और इतिहास का जीवंत चित्र प्रस्तुत करते हैं।
3. असमिया लोक साहित्य (जैसे बिहू गीत, विवाह गीत, कहावतें आदि) समाज के सुख-दुःख, परंपराओं और जनजीवन की झलक देता है।
4. भौतिक संस्कृतिमें घर, वस्त्र, औजार, आभूषण आदि जैसी ठोस वस्तुएँ शामिल होती हैं, जो समाज के आर्थिक और तकनीकी स्तर को दर्शाती हैं।
5. लोक पर्यावरण कलाप्रकृति और स्थानीय संसाधनों (जैसे मिट्टी, बाँस, लकड़ी) से जुड़ी होती है और मनुष्य व पर्यावरण के संतुलित संबंध को प्रकट करती है।

8.6 असमकालोक-सांस्कृतिक परिचय:

भारत के उत्तर-पूर्वी क्षेत्र में स्थितअसमएक समृद्ध ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और भाषाई विविधता से युक्त राज्य है। असम की संस्कृति अनेक जातीय और भाषाई समूहों के आपसी मिलन और आदान-प्रदान का परिणाम है। यहाँ की संस्कृतिऑस्ट्रिक (Austric), मंगोलियाई (Mongoloid), द्रविड़ (Dravidian) और आर्य (Aryan) संस्कृतियों के परस्पर प्रभाव से विकसित हुई है। इन विविध जातीय समुदायों के सह-अस्तित्व से असम में एक विशिष्टसांस्कृतिक, सामाजिक और आर्थिक ताना-बानानिर्मित हुआ हैजो इसे भारत के अन्य राज्यों से विशिष्ट बनाता है। असम की संस्कृति की सबसे बड़ी विशेषता इसकीविविधतामें निहित एकता है। यहाँ के विभिन्न जनजातीय और अन्य समुदाय-जैसेबोड़ो, कार्बी, दिमासा, मिसिङ, राभा, गारो, खासी, हाजङ, देवरी, तिवा, कोच, गोर्खा, ताई-आहोमआदिने अपनी-अपनी परंपरा, लोककथा, नृत्य-संगीत, रीति-रिवाज, जीवन-शैली आदि के माध्यम से असमिया संस्कृति को समृद्ध एवं बहुरंगी बनाया है।

नृवंशविज्ञानियों (Anthropologists) के अनुसार, असम की सांस्कृतिक यात्रा की शुरुआतऑस्ट्रिक भाषी मानव समुदाय के आगमन के साथ हुई थी। माना जाता है कि ऑस्ट्रिक लोग इस क्षेत्र में सबसे पहले पूर्व दिशा से आए थे और यहाँ के विभिन्नपहाड़ी इलाकोंमें बस गए।इन्होंने अपनी विशिष्ट परंपराएँ विकसित की। इस समूह के प्रमुख

प्रतिनिधिखासी और जयंतियासमुदाय हैं, जिनकी बस्तियाँ आज भी असम और मेघालय के सीमावर्ती क्षेत्रों में पाई जाती हैं। इसके बाद मंगोलियाई जातीय समूहइस क्षेत्र में आया। यह समूह पूर्व से, अर्थातबर्मा (म्यान्मार)एवं चीनसे-लगभगईसा की पहली से बारहवीं शताब्दीके बीच असम तथा उत्तर-पूर्वी भारत के अन्य भागों में प्रविष्ट हुआ। मंगोलियाई समूह के अंतर्गत आने वाले प्रमुख समुदाय हैं-बोड़ो, गारो, मिसिङ, कार्बी, दिमासा, तिवा, ताई-आहोम आदि हैं । इन समुदायों ने असम की लोक-संस्कृति में भाषा, नृत्य, लोकगीत, हस्तकला, वस्त्र और त्योहारों के माध्यम से गहरी छाप छोड़ी है। इसके अतिरिक्त आर्य जातिका आगमन पश्चिम दिशा से हुआ। नृवंशविज्ञानियों का मानना है कि आर्य लोग पहले उत्तर भारत में बसे और बाद में धीरे-धीरे पूर्वोत्तर क्षेत्र की ओर बढ़े। असम में बस जाने के पश्चात आर्यों ने अपने धार्मिक, भाषाई और सामाजिक प्रभाव से यहाँ की संस्कृति को एक नया रूप प्रदान किया। असम कीसंस्कृत परंपरा, वैष्णव भक्ति आंदोलन, तथासाहित्यिक-सांस्कृतिक जागरणइसी आर्य प्रभाव का परिणाम हैं। इतिहासकार यह भी बताते हैं किद्रविड़ मूल के कुछ जनजातीय समूहभी समय-समय पर असम में आए। हालाँकि उनकी संख्या अपेक्षाकृत कम थी, फिर भी उन्होंने असम की संस्कृति पर अपना आंशिक प्रभाव छोड़ा है । अंग्रेजों के शासनकाल मेंकोल, मुंडा, संथालजैसी द्रविड़ जनजातियाँबंगाल, ओडिसा औरझारखंडसे चाय बागानों में श्रम हेतु असम में लाई गईं। असम के कुछ विद्वानों ने यह भी संकेत किया है किकोच जनजातिमें द्रविड़तत्व विद्यमान हैं। इस प्रकार असम की सांस्कृतिक संरचना विभिन्न जातीय समूहों केसांस्कृतिक आदान-प्रदान, सह-अस्तित्व और समन्वयकी परिणति है। यहाँ की लोक-संस्कृति में जनजातीय परंपराओं, धार्मिक आस्थाओं, भाषाई विविधताओं और लोककला का अद्भुत संगम दिखाई देता है। असम वासी आज भी अपनी विशिष्ट सांस्कृतिक पहचान को बनाए रखते हुए आधुनिकता को आत्मसात करने की दिशा में निरंतर अग्रसर हैं। इसी कारण असम की लोक-संस्कृति न केवल उसकी ऐतिहासिक धरोहर का प्रतीक है, बल्कि वह एक जीवंत और निरंतर विकसित होने वाली सांस्कृतिक परंपरा भी है, जो समय के साथ नित नए रूपों में स्वयं को अभिव्यक्त करती रहती है।

8.6.1 असमकी भौतिकलोक-सांस्कृतिक विशेषताएँ:

असम में भौतिक लोक-संस्कृति आज भी जीवंत है। प्राचीन सामाजिक रीति-रिवाज और क्रिया-कलापों के अनगिनत प्रमाण इस राज्य में आज भी मौजूद हैं जिनका विवरण निम्नांकित है-

8.6.1.1 आवास:

भारत का उत्तर-पूर्वीभू-भाग जंगलों, पहाड़ियों और पर्वतों से आच्छादित है। यहाँ बाँस, बेंत और लकड़ी प्रचुर मात्रा में पाई जाती हैं । यहाँ के लोग इन सामग्री का

उपयोग घर बनाने,दैनिक उपयोगके सामान एवं सजावटी वस्तु बनाने के लिए करते हैं। इस क्षेत्र में रहने वाले लोगों को मोटे तौर पर जनजाति (Tribe) और गैर-जनजाति (Non-tribe)-दो वर्गों में विभाजित किया जा सकता है जिनमें बहुसंख्यक जनजातियाँ हैं। आवास निर्माण के क्षेत्र में जनजातियों की उत्कृष्टता उल्लेखनीय है। ये अधिकतर बाँस के छोटे घर बनाते हैं, जो दो प्रकार के होते हैं -ज़मीन पर बने घर और ऊँचे मंच पर बने घर जिन्हें 'चाङ घर' कहा जाता है । ज़मीन पर बने घरआकार में छोटे लेकिन साफ़-सुथरे होते हैं। घरों में दरवाज़ा होता है। इनमें खिड़कियाँ और बरामदे नहीं होते। फर्श को गोबर और मिट्टी से खूबसूरती से लीपा जाता है। ये पारंपरिक शैली में निर्मित होते हैं ।

बाँस एवं लकड़ी के ऊँचे मंच पर पारंपरिक निर्माण शैली में बने चाङ घर मज़बूत होते हैं। ये वर्षा, बाढ़ का पानी एवं हिंसक जानवरों से सुरक्षा प्रदान करते हैं । नीचे पशुओं को रखा जाता है या सामान संग्रह किया जाता है, जबकि ऊपर रहने की व्यवस्था होती है।

असम में रहने वाली गैर-जनजातियाँयानी आर्य समुदाय के लोग सदियों से साफ-सुथरे घरों में रहते आए हैं। आमतौर परये लोग संयुक्त परिवार में रहना पसंद करते हैं इसलिएउनके घर भी बड़े आकार के होते हैं। उनके पारंपरिक घर भी बाँसलकड़ी और घास-फूस से बने होते हैं । ये घरविभिन्न भाग, जैसे – बैठक कमरा, रसोईघर,शयनकक्ष, पूजाकक्ष आदि में बँटे होते हैं । इसके अलावाआँगन में नारियल, सुपारी के पेड़ तथा पान की बेल लगाना, पालतू पशु-पक्षी जैसे - बत्तख, बकरी, गाय-भैंसआदि को रखना इन घरों की विशेषता है, जो एक समृद्ध जीवन के लिए आवश्यक है।

8.6.1.2 खान-पान:

असम में धान की फसल का उत्पादन अधिक होता है। दलदली भूमि के साथ-साथ पहाड़ी क्षेत्रों में भी धान की खेती की जाती है इसलिएइस क्षेत्र के लोगों का मुख्य भोजन चावल है। विभिन्न प्रकार की सब्जियाँ, फलआदि की खेती भी इस क्षेत्र में होती है। केला, गन्ना, नारियल, संतरा, आम, अनान्नास,थेकेरा, बेल, अमरूद आदि फल इस क्षेत्र में बहुतायत रूप में उगाए जाते हैं। असम में विविध जनजाति के लोग निवास करते हैं, इसलिए इनका खान-पान भी अलग-अलग देखा जा सकता है।इस क्षेत्र में जीवन यापन करने वाले उच्च जाति के हिंदू लोग एक निश्चित प्रकार की मछली और

मांस को भोजन के रूप में स्वीकार करते हैं। हालाँकि, भारत के अन्य हिस्सों में रहने वाले उच्च जाति के हिंदू शाकाहारी भोजन खाते हैं। आग में आलू, मछली, मांस आदि भूनकर खाना जनजातीय समाज कीविशेषता है। इस क्षेत्र में गैर-जनजाति लोग भी जनजातियों के प्रभाव में आकर आलू, मछली, मांस आदि भून कर खाना पसंद करते हैं। वर्तमान काल मेंइस क्षेत्र के लोगों ने मसालों का उपयोग करते हुए अच्छी तरह से पकाने की विधि को अपनाया है। उन्होंने यह तकनीक आर्य समुदाय से सीखी है।

प्राचीन काल से ही असम के जनजातीय समाज में पारंपरिक मादक पेय पदार्थ केसेवन का प्रचलन है जो चावल आदि अनाज से बनाया जाता है ।'अपो/अपोंग' (अरुणाचल प्रदेश और असम की तानी जनजातियों की), 'चोको'या 'जोंगा-मद' (राभा जनजाति), 'हाज़' (अहोम), 'अपोंग' (मिसिङ),'ज़ू' (बोड़ो), 'सुजेन' (देवरी) आदि इसके उदाहरण हैं । लगभग हर जनजातीय समाज अपनी तकनीक से शराब बनाता है और इसे पेय के रूप में सेवन करता है। वर्तमान में असम से बाहरी राज्यों से कई लोग विभिन्न कारणों से असम आकर बस गए हैं । इन लोगों का मुख्य भोजन आटे से बनी रोटी और दाल है । असमिया जन-जीवन से घुलमिल जाने के बाद आजकल इन लोगों को भी असम का पारंपरिक भोजन ग्रहण करते हुए देखा जाता है और असम के लोग भी इनके प्रभाव में आकर दाल-रोटी खाते हुए देखे जाते हैं ।

8.6.1.3 परिधान:

पूर्वोत्तर भारत की जनजातियों के पारंपरिक परिधान में विविधता देखी जा सकती है । प्रत्येक जाति-समुदाय की अपनी अनूठी वेशभूषा और पहनावा है। असम में महिलाएँ मेखला-चादर पहनती हैं।पुरुष धोती-कुर्ता या सूरिया पहनते हैं जिसके साथ 'सेलेंग'नामक चादर ओढ़ी जाती है। ये हस्तनिर्मित रेशमी वस्त्र होते हैं, जिनमें हर जनजाति की अपनी विशिष्ट शैली होती है।मुगा तथा पाट सिल्क केमेखला-चादर पर विभिन्न प्रकार के फूल-बूटे बुने जाते हैं। असम के बुनकरों का काम देखकर महात्मा गांधी ने कहा था-असमिया बुनकर अपने कपड़ों में सपने बुन सकते हैं। 'गामोसा'(गमछा) असम में पुरुषों और महिलाओं दोनों के लिए एक महत्वपूर्ण वस्त्र है जिसका धार्मिक और सांस्कृतिक महत्व है।

दिमासा जनजाति के पुरुष सिर पर सगाओफा या फागरी (पगड़ी) पहनते हैं, जो उनके गर्व का प्रतीक होता है। रिशा और गैंथाओ दोनों धोती हैं, जिनकी लंबाई अलग-अलग होती है। रिशा घुटने तक आती है, और गैंथाओ टखने तक। इस जनजाति की

महिलाओं का परिधान मेखला-चादर से काफी मिलता-जुलता है । इनके पारंपरिक परिधान को 'रिगु'कहा जाता है। रिगु कपड़े का एक लंबा टुकड़ा होता है, जिसे कमर से नीचे पहना जाता है और आमतौर पर टखनों तक लंबा होता है।

बोड़ो जनजाति के पुरुष साधारण कपड़े पहनते हैं और उन्हें असम की आम पोशाक यानी गामोछा पहने हुए देखा जा सकता है। इस जनजाति की महिलाएँ 'दोखना' पहनती हैं। दोखना विभिन्न चटख रंगों, पैटर्न और अगोर (कलात्मक बार्डर) से बना होता है जो पारंपरिक हथकरघे में बनाया जाता है । यहाँ के लोग एरी रेशों का उपयोग करके बेहतरीन कपड़े बनाने की कला में निपुण होते हैं, जो सभी को पसंद आते हैं।

मिशिंग पुरुष पारंपरिक रूप से 'मिबू गालुक' पहनते हैं—एक ऐसी शर्ट जो सादी होने के साथ-साथ आकर्षक भी होती है; इसके साथ वे 'गोनरू उगोन' (एक धोती) और 'डुमेर' (एक गमछा) पहनते हैं। ये परिधान रोज़मर्रा के जीवन के लिए व्यावहारिक होने के साथ-साथ उनकी सांस्कृतिक गौरव को भी दर्शाते हैं। धोती और गमछे अक्सर हथकरघों पर बुने जाते हैं, जो इस जनजाति के बुनाई कौशल को प्रदर्शित करते हैं। पुरुषों के ये परिधान आराम और उपयोगिता पर ज़ोर देते हैं-जो खेती-बाड़ी के काम और सामुदायिक समारोहों के लिए उपयुक्त हैं-और साथ ही गरिमा व परंपरा की भावना को भी बनाए रखते हैं।

मिशिंग जनजाति की महिलाएँ अपनी बुनाई की विशेषज्ञता के लिए विशेष रूप से जानी जाती हैं। वे 'गसेंग' नामक एक स्वयं-बुना हुआ वस्त्र पहनती हैं, जो शरीर के निचले हिस्से को ढकता है। ऊपरी वस्त्र के लिए, वे 'केब्बुंग' का उपयोग करती हैं, जो एक और स्वयं-बुना हुआ कपड़ा है। सर्दियों या उत्सव के अवसरों पर, महिलाएँ 'रिबी गसेंग' नामक खूबसूरती से बुनी हुई शॉल ओढ़ती हैं। ये शॉल न केवल उपयोगी होती हैं, बल्कि इनमें जटिल डिज़ाइन और आकृतियाँ भी उकेरी जाती हैं।

राभा जनजाति की महिलाओं का पहनावा अनूठा होता है। हालाँकिपुरुष वर्ग असमिया पहनावे की आम परंपरा अर्थात् धोती-गामोसा (गमछा)का अनुसरण करते हैं। लोग इसमें कुछ बदलाव कर रहे हैं, लेकिन उन्हें सफ़ेद (या रंगीन) धोती और लंबा गामोसा पहनने का स्थानीय तरीका पसंद है, जो राज्य की लगभग हर जनजाति में एक समान है।

राभामहिलाएँ अपने शरीर के ऊपरी भाग में **रिजाम्फा** और नीचले हिस्से में **कंबांग** नामक वस्त्र पहनती हैं जो पारंपरिक हथकरघे से बने मनमोहक डिजाइन से युक्त होते हैं । ये महिलाएँ अपने कमर में सुंदर सीपी और मोती जड़ित एक कमरबंद पहनती

हैं जिसे 'लाबोक' कहा जाता है ।इस परिधान के अनुरूप पारंपरिक आभूषणों में चाँदी, पीतल और मनकों के गहनों का प्रयोग होता है।

तिवासमुदाय का परिधान उनकी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत और जीवंत रंगों का प्रतीक होता है। इस समुदाय की महिलाएँ कुशल बुनकर होती हैं और अपने पारंपरिक कपड़े खुद बनाती हैं।**फास्काई, कासोङ, रिहा** और **नारा** इस समुदाय की महिलाओं के परिधान हैं । फास्काई मूल रूप में काले रंग का ऊपरी शरीर को ढँकने वाला वस्त्र है। कासोङ शरीर के नीचले हिस्से का परिधान है और नारा कमर का बेल्टनुमा वस्त्र है ।

तिवा पुरुष सिर पर **फागुरी** (पगड़ी विशेष), शरीर पर एक पारंपरिक जैकेट जिसे **थागला** कहा जाता है और शरीर पर **थेनाशा** नाम पारंपरिक वस्त्र ओढ़ते हैं । ये अधिकतर काले और लाल रंग के होते हैं जो पारंपरिक हथकरघे में बुने जाते हैं ।

गोर्खा समुदाय अपने रंगबिरंगे पारंपरिक परिधान के लिए जाना जाता है । इस समुदाय की महिलाएँ विशेष प्रकार की चोली-साड़ी और कमर वस्त्र 'पटुकी' (विशेष बेल्ट) पहनती है, जो ढाका नामक वस्त्र से बनता है। पुरुष दौरा-सुरुवाल (विशेष कुर्ता-पाजामानुमा), अस्कोट (वेस्टकोट), कमर में खुकुरी (जातीय हथियार) के साथ पटुकी (विशेष बेल्ट) और सिर पर ढाका टोपी पहनते हैं ।

असम का **कार्बी** समुदाय अपने विशेष परिधान के लिए जाना जाता है । ये विशेषकर लाल, काले और सफेद प्राकृतिक रंग के होते हैं जो पारंपरिक हथकरघे में बुने कपड़ों से बनते हैं । ये एरी रेशम, कपास या ऊन के बने होते हैं। कार्बी पुरुष विशेष प्रकार की धोती-गामोछा एवं वेस्टकोट पहनते हैं । महिलाएँ कमर के चारों ओर एक मेखला पहनती है जिसे 'पिनी' कहा जाता है। 'पेकोक'ऊपरी शरीर को ढँकने वाला एक चौकोर वस्त्र है, जिसे दाईं ओर के कंधे पर बाँधा जाता है। ये महिलाएँ कमर पर एक कलात्मक कमरबंदपहनती है, जिसे 'वैनकोक' कहा जाता है।

8.6.1.4 शिल्प-कला :

असम बेंत, बाँस, काष्ठकला, मिट्टी के बर्तन और बेल धातु (काँसा) के शिल्प के लिए जाना जाता है। प्राकृतिक रूप से सुनहरे रंग का मुगा रेशमकेवल असम में पाया जाता है। पारंपरिक शिल्पकला के रूप और बाँस से बने जापी (टोपी) का उपयोग भी प्रमुख है। जापीबिहू नृत्य और घर की सजावट का एक महत्वपूर्ण सांस्कृतिक प्रतीक है, और यह वैश्विक स्तर पर असम का सांस्कृतिक प्रतीक बन गई है। गमछा एक महत्वपूर्ण सांस्कृतिक प्रतीक है जो धार्मिक अनुष्ठानों में शुद्धिकरण के लिए उपयोग होता है। हथकरघे में बुने सादगीपूर्ण पारंपरिक परिधान जैसे मेखला-चादर और गमछा असमिया लोक-सांस्कृति के प्रतीक हैं । ओजापली और बागुरुम्बा जैसे नृत्य में पारंपरिक शिल्पकला के रूप और जापी का उपयोग भी प्रमुख है। असम का सबसे प्रसिद्ध

त्योहार बिहू, ओजापली और बागुरुम्बा जैसे बोड़ो जनजातीय नृत्य में पारंपरिक शिल्पकला का उपयोग देखा जा सकता है। ढोल, पेपा, गगना और बाँहीं (बाँसुरी) असम के पारंपरिक वाद्ययंत्र हैं जो पारंपरिक नृत्य और गीत के अभिन्न अंग हैं।

8.6.2 असमकालोक-विश्वास:

सामान्यतः असमिया लोक-संस्कृति भारतीय लोक-संस्कृति के साथ काफी साम्य रखती है। पूर्वोक्त तथ्य के अनुसार असमिया समाज विभिन्न भाषिक समुदायों और संस्कृतियों के मिश्रण से निर्मित है। असमिया लोक-संस्कृति के प्रमुख तत्वों के विश्लेषण में सबसे पहले यहाँ जीवन-यापन करने वाले लोगों के धार्मिक विश्वास, पूजा-पाठ, अनुष्ठान आदि पर विचार करना होगा। इनका भूत-प्रेत, पिशाच, यक्ष-यक्षिणी, बूढ़ा-डाँगरिया, प्रेतात्मा आदि में मूल विश्वास है। पेड़, पहाड़-पर्वत, नदी-नदी की पूजा करने की परंपरा अभी भी अधिकांश मानव समुदायों में प्रचलित है।

8.6.2.1 धार्मिक विश्वास:

असम कई धर्मावलंबियों का निवास स्थल है। यहाँ हिंदू, इस्लाम, ईसाई, सिख, जैन, बौद्ध आदि धर्मों के अनुयायी इस क्षेत्र में एक-दूसरे के साथ सहिष्णुता और सद्भाव के साथ रहते हैं। इसके अलावायहाँ कई जनजाति समूह भी हैं, जिनके अपने पारंपरिक धर्म हैं; जैसे बोड़ो जनजाति का बाथौ धर्म।

असमिया जाति-जनजातियों के पारंपरिक धर्म में पशु-पूजा का काफी महत्त्व है। यहाँ पशुओं पर केंद्रित कई विश्वास और सामाजिक प्रथाएँ हैं। यहाँ गाय को माँ एवं लक्ष्मी का दर्जा दिया जाता है। गो-सेवा कोसबसे अधिक प्राथमिकता दी जाती है। भारत में सनातन धर्मावलंबियों में गाय को विशेष सम्मान देने की परंपरा प्राचीन काल से ही चली आ रही है। उसी तरह बैल भी यहाँ विशेष रूप में सम्मानित है। भगवान शिव का दूसरा नाम पशुपति है औरबैल उनका वाहन है। भारत की बड़ी आबादी आजीविका के लिए गोधन पर निर्भर है। गाय स्वास्थ्यवर्धक दूध, दही और घी जैसी वस्तुओं का स्रोत है, वहीं बैल कृषि प्रधान देशमें पिता की भूमिका निभाते हैं। असमिया समाज में बिहू में गोधन को विशेष सम्मान दिया जाता है। उन्हें नहलाया जाता है, खिलाया-पिलाया जाता है और पूजा की जाती है। गाय के गोबर और मूत्र का उपयोग केवल दवा के रूप में ही नहीं किया जाता बल्कि इसे भूत-पिशाच भगाने की शक्ति के रूप में भी प्रयोग किया जाता है। आँगन में गोबर के उपलों को जलाने का उद्देश्य भी यही है। हिंदू धर्म

मेंशुद्धिकरण के लिए प्रयोग में लाया जाने वाला पंचगव्यसबसे पवित्र वस्तु माना जाता है।असम में नाग पूजा लगभग सभी समुदायों में प्रचलित है। नाग पर आस्था को अधिक सुदृढ़ करने के लिए कई प्राचीन आख्यान और कथाएँ भी रची गई हैं।

धर्म और संस्कृति के मामले में असम के लोग उदार और सहिष्णु हैं। अन्य धर्मों के प्रति सम्मान दिखाना इस क्षेत्र के लोगों की एक बड़ी विशेषता है। मध्य युग मेंश्रीमंत शंकरदेव ने नव-वैष्णव धर्म का प्रचार-प्रसार किया जिसका प्रभाव इस क्षेत्र में जीवन-यापन करने वाली अधिकांश जाति-जनजातियों पर भी पड़ा। मध्य युग में अजान फकीर ने इस्लाम धर्म का प्रचार-प्रसार किया। इसके साथ ही यहाँ समय के साथ बौद्ध ,जैन, ईसाईजैसे धर्मों के सिद्धांतों का भी प्रचार-प्रसार हुआ। सभी धार्मिक सिंद्धांतों ने लोगों को एक अच्छा जीवन जीने के लिए प्रेरित किया। सभी धर्मों ने मानव शिक्षा, शुद्ध आचरण, ईश्वर की साधना जैसे सिद्धांतों का प्रचार-प्रसार किया।

असम में सामाजिक स्तर पर सबसे अधिक प्रभाव एक शरणिया नव वैष्णव धर्म का रहा। महापुरुष शंकरदेव और माधवदेव ने विभिन्न कुरीतियों से ग्रस्त समाज को एक नई दिशा प्रदान की। इसने भक्ति, समानता और जातिभेद-रहित समाज का संदेश दिया। सत्र और नामघर जैसे संस्थानों ने सामाजिक-सांस्कृतिक जीवन को संगठित किया। नृत्य, संगीत (सत्रीय नृत्य) और साहित्य का विकास हुआ। इस आंदोलन ने असम की सांस्कृतिक पहचान को सुदृढ़ किया तथा जनमानस में नैतिकता और आध्यात्मिकता का प्रसार किया।

8.6.2.2 पशु-प्राणियों से संबंधित लोक-विश्वास:

असम में धर्म से संबंधित कई त्योहारों में मुर्गे और मछली की आवश्यकता होती है; लोक-कथाओं और लोक-संस्कृति में इन दोनों का अधिक महत्त्व है।कई समुदाय बंदरों की पूजा करते हैं। बहुत से लोग मानते हैं कि बंदर को मारना पाप है। कभी-कभीकाली बिल्ली को भूत-प्रेत का प्रतीक माना जाता है। घर में बिल्ली का म्याऊँ-म्याऊँ करके घूमना अशुभ माना जाता है। चोर की मौत की कामना के लिए भी बिल्ली कीबलि देने की प्रथा भी रही है। असमिया लोककथाओं में लोमड़ी के बारे में कई कहानियाँ मिलती हैं। ऐसी कहानियाँ अन्य भारतीय भाषाओं में हैं। पुरानी असमिया लोरी गीतों में कई बार सियार का उल्लेख मिलता है। लोमड़ी की चालाकी, लोमड़ी से दोस्ती करना, धूर्तता आदि का वर्णन करने वाली कई मनोरंजक लोककथाएँ विभिन्न समुदायों में प्रटलित हैं । हाथी को हमेशा शुभ का प्रतीक माना जाता है। पृथ्वी के हाथी

पर टिके होने का विश्वास भी कई आदिम लोगों में मौजूद है। हाथी के संबंध में कई लोककथाएँ भी हैं। 'सफेद हाथी' एक कहावत बन गई है। हाथी को सिद्धिदाता और विघ्नेश्वर गणेश के रूप में भी देखा जाता है । पत्थर पर खुदी हुई गणेश की मूर्तियाँ पूरे असम में यत्र-तत्र देखने को मिलती हैं। सुअर और कुत्ते को पालतू पशु के रूप में घर-घर पाला जाता है। बोड़ो भाषी लोगों का सांस्कृतिक जीवन सुअर से जुड़ा हुआ है। उनके लगभग सभी धार्मिक और सामाजिक उत्सवों में सुअर की बलि दी जाती है।

पक्षियों में, कौवे से संबंधिक कई लोक विश्वास प्रचलित हैं । कौवे की आवाज़ के अलग-अलग अर्थ लगाए जाते हैं। यह दुर्भाग्य के संकेत और मेहमानों के आने की खबर भी देता है। यदि कोई यात्रा पर जा रहा हो और कौवा बोलता है, तो इसे अपशकुन माना जाता है। उल्लू को लक्ष्मी का वाहन माना जाता है और एक समय इसे शुभ पक्षी माना जाता था लेकिन आमतौर पर इसे एक अशुभ पक्षी माना जाता है। माना जाता है कि जब उल्लू 'न्यू न्यू' करता है, तो किसी की मृत्यु होती है। यदि घर में उल्लू घुस जाए, तो परिवार के लिए दुर्भाग्य का सूचक है। उल्लू का मांस और पंख कामोत्तेजक दवाओं में उपयोग होते हैं। मोर पक्षी का सम्मान किया जाता है। इसके पंखों को न केवल सुंदर माना जाता है, बल्कि पवित्र भी माना जाता है। हिंदू मान्यता के अनुसार, यह कार्तिकेय का वाहन है। भगवान श्रीकृष्ण के मुकुट में इसके पंख देखे जा सकते हैं इसलिए मोर को एक शुभ पक्षी माना जाता है। मोर के पंखों से बने पंखों का उपयोग उत्सवों के दौरान किया जाता है। माना जाता है कि मोर के पंखों में बीमारी ठीक करने की जादुई शक्ति होती है। तूफान और बारिश से बचने के लिए घरों की छतों पर मोर पक्षी की प्रतिकृति रखी जाती है।

तितली भी लोक कथाओं और लोक विश्वासों का केंद्र है। यदि शरीर पर तितली बैठती है, तो विवाह आसन्न है। कई जनजातियों में यह माना जाता है कि तितली मृतकों की आत्मा है। मधुमक्खियों के बारे में भी कुछ जगहों पर कई लोक विश्वास प्रचलित हैं। यदि मधुमक्खियों का एक छत्ता अपने आप घर में आ जाए, तो यह सौभाग्य का संकेत है। यदि पालतू मधुमक्खियों का छत्ता घर छोड़ दे, तो यह दुर्भाग्य का संकेत है।

8.6.2.3 कृषि संबंधी लोक-विश्वास:

फसल अच्छी तरह से बढ़े, इसके लिए कई रीति-रिवाज और अनुष्ठान किए जाते हैं। काति बिहू के समय खेतों में दीपक जलाया जाता है। चावल मनुष्यों का केवल

मुख्य भोजन नहीं है, इसका मंत्रों में भी उपयोग होता है। असमिया विवाह में जब दूल्हा दुल्हन के घर आता है, तो दूल्हे से बुरी आत्माओं को दूर करने के लिए चावल फेंकने की प्रथा है। जनजातीय लोग भी जादू और बुरी आत्माओं के बारे में भविष्यवाणी करते समय चावल का उपयोग करते हैं। भंडार में अनाज जमा करने के संबंध में भी कई मान्यताएँ हैं। उपवास के समय महिलाओं को भंडार के पास जाने की अनुमति नहीं होती है। भंडार की पूजा भी की जाती है। काती बिहू पर भंडार के सामने दीया जलाया जाता है।

मुख्यतः कृषि पर निर्भर समाज जल के लिए प्राकृतिक शक्तियों की आराधना करता है। असमिया संस्कृति में वर्षा के आह्वान तथा उसे रोकने के लिए कई अनुष्ठान और मंत्र प्रचलित हैं। यहाँ तक कि प्रलयंकारी बाढ़ से सुरक्षा के लिए झरनों और नदियों की पूजा की जाती है। ऐसी सामाजिक प्रथाएँ जनजातीय समुदायों में भी गहराई से व्याप्त हैं। फसल की कटाई के बाद पहली मुट्ठी चावल ईश्वर एवं लोगों को अर्पण करने की परंपरा भी इन्हीं लोक-मान्यताओं और प्रकृति के प्रति कृतज्ञता के भाव से जुड़ी है। धान की कटाई खत्म होने के ठीक बाद असमिया लोग विशेष विधि के साथ 'न-खोवा' (नया अन्न ग्रहण करना) भोज करते हैं। इस औपचारिक भोज के बाद ही नए चावल को ग्रहण किया जा सकता है।

माघ बिहू फसल की कटाई का उत्सव है। यह वास्तव में पहली फसल ग्रहण करने का उत्सव है। इस उत्सव में तिल, चावल, सरसों आदि नई फसलों को अग्नि देवता को अर्पित कर प्रसन्न किया जाता है। इसी तरह जब पेड़ पर पहला फल लगता है, तो उसका एक फल देवता को अर्पित किया जाता है। फिर नई ब्याही गाय का दूध निकालकरखेती से जुड़ी अधिष्ठात्री देवी एवं देवताओं को अर्पित किया जाता है। इन देवताओं को प्रसन्न करने के लिए नए अन्न से खाद्यान्न तैयार किए जाते हैं । इस संबंध में नए चावल के पीठे बनाने की परंपरा है । पीठातैयार करते समय देवताओं को प्रसन्न करने के लिए कुछ नियमों का पालन किया जाता है। पहला पीठा अग्नि देवताको अर्पित किया जाता है। बिहू पर्व में रिश्तेदारों को पीठा खिलाना इस श्रेणी का एक शुभ अनुष्ठान है। ये पीठे भिखारियों को भी भिक्षा में दिए जाते हैं । माघ बिहूमें गायों को भी पीठा खिलाया जाता है। अन्न भंडार को आग, बारिश और चूहों से सुरक्षित रखने के लिए और खेतों में फसल की सुरक्षा के लिए भी इस तरह के अनुष्ठान किए जाते हैं।

8.6.2.4 अन्यलोक-विश्वास:

असमिया समाज में लोहे के औजारों से जुड़ी कई मान्यताएँप्रचलित हैं। यह माना जाता है कि लोहे में जादुई गुण होते हैं । इस कारण कटारी, दाव, सुई, कृषि के उपकरण, मछली पकड़ने के उपकरण तथा अन्य लोहे के तेज धार वाले औजारसंबंधी कई मान्याताएँ प्रचलित हैं । यदि परिवार के किसी सदस्य की मृत्यु हो जाती है, तो परिवार में एक व्यक्ति मृतक का अंतिम संस्कार और श्राद्ध-तर्पण करता है । वह तेरह दिन तक विशेष विधि के अनुसार दिवंगत आत्मा का तर्पण करता है और सूतक के अनुसार उसे कोई छू नहीं सकता । यह मान्यता है कि सूतक के दिनों में तर्पण करने वाले व्यक्ति को अपने पास एक लोहे की कटारी या कोई अन्य लोहे का औजार रखना चाहिए; अन्यथा, मृतक की आत्मा उसे नुकसान पहुँचा सकती है।

नवजात शिशु के जन्म के बाद, प्रसूता और बच्चे को भूत-प्रेत से बचाने के लिए प्रसूता के बिस्तर के नीचे एक कटारी रखी जाती है। असमिया विवाह परंपरा के अनुसार विवाह समारोहमेंवर और कन्या दोनों को अपने पास एक-एक कटारी रखनी चाहिए। विधि-कर्म समाप्त होने के बाद वर और कन्या को 'टेमी कटारी सलोवा' (कटारियों का आदान-प्रदान) का हास्यपूर्ण रिवाज निभाना होता है । 'दा' (दाव)के बारे में भी कई मान्यताएँ हैं। बलि देने के लिए इस्तेमाल होने वाले 'दा' की मंत्रों के साथ पूजा की जाती है ।कालिका-पुराण में ऐसे मंत्रों का उल्लेख है। गारो जनजाति के लोग खेती प्रारंभ करने से पहले 'दा-कटारी' नृत्य-गीत के साथ पूजा करते हैं।

प्राचीन काल में वृक्षों को देवता मानकर उनकी पूजा की जाती थी पर समय के साथ, यह विश्वास किया जाने लगा कि वृक्षों में भूत-प्रेत रहते हैं। बौद्ध लोग बोधिद्रुम (पीपल) की पूजा बड़ी श्रद्धा से करते हैं, जिसकी छाया में भगवान बुद्ध ने बोध (ज्ञान) प्राप्त किया था । असम के वैष्णव लोगों के लिए शिलिखा वृक्ष (हरड़ या हर्रा, वैज्ञानिक नाम: Terminalia chebula) बहुत पूजनीय है। शंकरदेव ने शिलिखा वृक्ष की छाया में विश्राम किया था। कालीगोसानी के सेवक हाथ में नीम की टहनी लेकर चलते हैं । असम में नीम के पत्ते भूत भगाने की दवा हैं। बोडो-कछारी लोगों के लिए सिजु पौधा (कैक्टस के समान, अन्य नाम छाल कुँवरी, वैज्ञानिक नाम:Euphorbia neriifolia)विशेष रूप से महत्वपूर्ण है। वे इस पौधे को अपने आँगन में लगाते हैं और उसकी पूजा करते हैं। इसकी पूजा अर्चना करके आगजनी, बारिश और तूफान से सुरक्षा की प्रार्थना की जाती है । असमियाखाद्य में कचु (अरबी), ढेकिया (एक जंगली सब्जी) तथा अन्य

पौधेविशेष सम्मानितहैं। बिहलोंगनि का पौधा (वैज्ञानिक नाम: Polygonum hydropiper) झाड़-फूँक के लिए प्रयोग में लाया जाता है । यह मान्यता है कि इससे भूत-प्रेत डरते हैं। सामान्य बिमारियों में स्थानीय ओझा इसकी शाखाओं से झाड़-फूँक करते हैं जिससे भूत-प्रेत भाग जाते हैं और शरीर का दर्द ठीक हो जाता है। सुपारी और पान असमिया समाज में दैनिक जीवन के अंग हैं। ये धार्मिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक अनुष्ठानों में बड़ी श्रद्धा के साथ उपयोग किए जाते हैं ।

स्मरणीय बिंदु:

1. असम की संस्कृति विविधतापूर्णहै, जिसमें ऑस्ट्रिक, मंगोलियाई, द्रविड़ और आर्य संस्कृतियों का समन्वय दिखाई देता है।
2. असम की पहचान'विविधता में एकता'है, जहाँ बोड़ो, कार्बी, मिसिङ, तिवा, कोच, गोर्खा, चाय बागानिया आदि अनेक समुदाय अपनी परंपराओं से संस्कृति को समृद्ध करते हैं।
3. सांस्कृतिक विकास का क्रम -सबसे पहले ऑस्ट्रिक, फिर मंगोलियाई, उसके बाद आर्य और आंशिक रूप से द्रविड़ समुदाय का प्रभाव पड़ा।
4. भौतिक लोक-संस्कृतिमें बाँस या लकड़ी के घर (चाङ घर), चावल-आधारित भोजन और पारंपरिक जीवनशैली प्रमुख हैं।
5. खान-पान और परिधानमें विविधता -चावल मुख्य भोजन, पारंपरिक पेय, तथा मेखला-चादर, गामोसा आदि विशिष्ट वस्त्र।
6. शिल्प-कला और त्योहार -बाँस, बेंत, मुगा रेशम, जापी, बिहू, तथा ढोल- पेपा जैसे वाद्य असम की पहचान हैं।
7. लोक-विश्वास और धर्म-प्रकृति पूजा, पशु-पूजा, भूत-प्रेत में विश्वास, तथा वैष्णव आंदोलन (शंकरदेव) के प्रभाव से सामाजिक-सांस्कृतिक एकता सुदृढ़ हुई।

8.6.3 असम के लोकउत्सव-पर्व:

असम में वर्ष भर विभिन्न प्रकार के पर्व-उत्सव मनाए जाते हैं। इन उत्सव-पर्वों को निम्नांकित तीन वर्गों में वर्गीकृत करके अध्ययन किया जा सकता है:

(क) कृषि-आधारित उत्सव-पर्व

(ख) धार्मिक उत्सव-पर्व

(ग) जन्म-मृत्यु-विवाह से जुड़े उत्सव-पर्व

पूर्वोत्तर भारत में अधिकांश लोग कृषक हैंइसलिए कृषि से संबंधित पर्व-उत्सव, जैसे बिहू, बैसाग (वैशाख) आदि बड़े उत्साह के साथ मनाए जाते हैं। इसी तरहविभिन्न ऋतुओं में मनाए जाने वाले उत्सव भी इस क्षेत्र की विशेष सामाजिक विशेषताओं को दर्शाते हैं।वसंत ऋतु मेंलगभग सभी जनजातीय समूह आनंद-मोद से भरे गीत-नृत्य समारोह का आयोजन करते हैं। वसंत ऋतु में पालन किए जाने वाले पर्वों को विभिन्न जनजातियाँ अलग-अलग नाम से पुकारती हैं, जैसे, बोड़ो लोग बैशागु, तिवा लोग छग्रामिचावा,मिसिङ लोग अली-आई-लिगांग कहते हैं।

असम में दुर्गा पूजा, दिवाली, ईद, क्रिसमस आदि धार्मिक उत्सवभी बड़े उत्साह, भक्ति और श्रद्धा के साथ मनाए जाते हैं। असम में अधिकांश जनजातीय समुदाय हिंदू धर्मावलंबी हैं । ये शिव, प्रकृति, सूर्य, शक्ति और लोक देवताओं की पूजा करते हैं । उत्तर-पूर्व भारत में असम, मणिपुर, त्रिपुरा, सिक्किम, अरुणाचल प्रदेश आदि राज्यों में हिंदू धर्म मानने वाले लोगों की संख्या अधिक पाई जाती है । विष्णु, शक्ति, शिव, गणपति इस क्षेत्र के प्रमुख इष्ट देवता हैं। कुछ विद्वानों का मानना है कि प्राचीन काल में आर्यशिव को अनार्य देवता मानते थे। आर्य पहले शिव की पूजा नहीं करते थे । कालांतर में उनकी आस्था और शक्ति से जुड़ी कई कहानियाँ सामने आईं । इसके बाद शिव लिंग के रूप में उनकी पूजा करने का प्रचलन प्रारंभ हुआ । असम के बोडो समुदायप्राचीन काल से ही शिव को अपना इष्ट देवता मानता आ रहा है। जब पूरे असम के विभिन्न समुदायों में सनातन हिंदू धर्म का प्रसार हुआ, तो गैर-हिंदू जनजातियों के रीति-रिवाज और धर्म भी हिंदू समाज में शामिल हो गए। इस तरह आर्य और गैर-आर्य की मान्यताओं के मिश्रण से उत्पन्न धर्म विशेष को योगिनीतंत्र में 'कैरातज धर्म' कहा गया है। बोड़ो लोग शिव को पूज्य देवता के रूप में कई नामों से पुकारते हैं - बाथौ, बीरथ, सिवाय, खीबिया आदि। अधिकांश पारंपरिक जनजातीय धर्म में एक धार्मिक विशेषज्ञ या पुजारी होता है, जो माध्यम, दिव्यदर्शी और मार्गदर्शक का कार्य करता है।

समग्र पूर्वोत्तर भारत की धार्मिक जनसांख्यिकी को देखने पर पता चलता है कि हर मानव समुदाय अपनी-अपनी धार्मिक मान्यताओं से आबद्ध है। असम के निवासी विभिन्न जनजातीय समुदाय के अपने-अपने आराध्य देवी- देवताएँ हैं । कार्बी समुदाय हेक्षु, मुक्रांग, राछिंजा, पेंग आदि देवताओं की पूजा करते हैं। मिसिङ लोग दुमगः, दुंकांग, मृगलु, ताकार, दःत्रि पलः आदि की पूजा करते हैं। मंगोलियाई मूल की अधिकांश जनजातियाँ अपने इष्ट देवताओं को प्रसन्न करने के लिए पूजा में बलि चढ़ाती हैं। असम

और अरुणाचल प्रदेश में रहने वाले ताई समुदाय, जैसे - खामती, फाके, आइतन, तुरूंग, खामयांग आदि लोग थेरवादी बौद्ध धर्म के अनुयायी हैं।

जन्म और विवाह जैसे अवसर बड़ेउत्साह के साथ पालन किए जाते हैं । बच्चे के जन्म का उत्सव मनाना लगभग सभी जनजातीय समुदायों की विशेषता है। बोड़ो समुदाय बच्चे के जन्म के सात दिन बाद अपने पुजारी को घर बुलाकर बच्चे और घर का शुद्धिकरण करते हैं। मृत्यु भी यहाँ एक सामाजिक जिम्मेदारी होती है । मृतक का दाह-संस्कार अपने-अपने रीति-रिवाजों के अनुसार किया जाता है । मृत्यु के बाद भी विभिन्न प्रकार के अनुष्ठान प्रचलित हैं। अपने पूर्वजों के प्रति श्रद्धा प्रकट करने के लिए, समाज के लोगों को आमंत्रित करके अपनी नियमावली के अनुसार विशेष भजन-कीर्जन, नाम गायन, भोज आदि का आयोजन किया जाता है।कार्बी लोग 'चमांकान' नामक एक अनुष्ठान का आयोजन करते हैं, जो मृत व्यक्ति की आत्मा की सद्गति के लिए होता है।ताइ अहोम लोग पूर्वजों के प्रति श्रद्धा प्रकट करने के लिए 'मे-दम-मे-फी' पालन करते हैं । सभी जनजातियाँ बच्चे के नामकरण के अवसर पर सामाजिक समारोह का आयोजन करती हैं। दिमासा लोग 'मिचिंगजिरावा' (अन्न-प्रासन) नामक पर्व का आयोजन करते हैं, जिसमें बच्चे को पहली बार अन्न खिलाया जाता है। मनुष्य की मृत्यु के बाद बड़ी श्रद्धा से 'माइमुथारवा' (श्राद्ध) एवं भोज का आयोजन किया जाता है । इसी तरह प्रत्येक जनजातीय समुदाय में विवाह समारोह भी अपनी-अपनी रीति के अनुसार विशेष रूप से आयोजन किए जाते हैं।

जन्म-मृत्यु-विवाह से जुड़े संस्कारों मेंअसम के लोगों के बीच स्नेह और सौहार्द की तस्वीर उभरती है। जब किसी परिवार में बच्चे का जन्म होता है, तो पूरा गाँव और पड़ोस के लोग मिलकर खुश होते हैं, उसी तरह जब किसी परिवार में किसी की मृत्यु होती है, तो गाँव या पड़ोस के लोग दुखी होते हैं।असम की सामाजिक संरचना जटिल है। जनजातीय और गैर-जनजातीय समूहों के लोग सामाजिक रीति-रिवाजों, विश्वासों और परंपराओं का कड़ाई से पालन करते हैं। मृत्यु के प्रति सम्मान जताना उत्तर-पूर्वांचल के लोगों की एक सामाजिक विशेषता है। विवाह उत्सव में आमंत्रित अतिथिगण सामाजिक रीति-रिवाजों के साथ विवाह कार्य संपन्न करने के लिए सहभागी बनते हैं ।

8.6.4 असम के लोकनृत्य-गीत:

किसी भी विशिष्ट जाति की लोक-संस्कृति की चर्चा, उसके सामाजिक जीवन और आमोद-प्रमोद के तौर-तरीकों के अध्ययन के बिना अधूरी है। ग्रामीण परिवेश में

मनोरंजन और अवकाश के कुछ विशेष अवसर सुनिश्चित हैं, जिनमें 'बिहू' के तीनों पर्व प्रमुख हैं। प्रत्येक बिहू अपने आप में एक आनंदोत्सव है, जहाँ सुर, ताल और उत्साह का अद्भुत संगम देखने को मिलता है।

विशेषकर बोहाग बिहू के दौरान सामूहिक लोक-नृत्यों का आयोजन होता है, जिसमें युवा वर्ग टोलियाँ बनाकर नृत्य करते हैं। यह नृत्य जहाँ एक ओर प्रेम की अभिव्यक्ति है, वहीं दूसरी ओर ढोल, पेपा और गोगना जैसे पारंपरिक वाद्यों की थाप पर किया जाने वाला यह प्रदर्शन 'प्रजनन और सृजन' का भी प्रतीक है। इसके माध्यम से माँ वसुमति से यह प्रार्थना की जाती है कि वे बुरी शक्तियों का नाश करें और खेतों में फसलें लहलहा दें ।

बिहू के माध्यम से हमें अपनी समृद्ध प्राचीन काव्य-परंपरा के दर्शन होते हैं। बिहू गीतों की विविधता अत्यंत विस्तृत है, जिनमें पौराणिक आख्यानों, लोक-किंवदंतियों और ऐतिहासिक संदर्भों से युक्त काव्यात्मक रचनाओं से लेकर सीधे, शृंगारिक और हास्य-व्यंग्य से भरपूर गीत शामिल हैं। प्रेम की अभिव्यक्ति में इन गीतों की भूमिका केंद्रीय है; इनके माध्यम से युवा हृदय हास-परिहास और उल्लास के बीच अपनी भावनाओं का आदान-प्रदान करते हैं। बिहू गीतों की सुमधुर स्वर-लहरी और अनूठी गायन शैली इसे वास्तव में अद्वितीय बनाती है।

असमिया ग्रामीण अंचल के प्रमुख लोक-नृत्यों में 'देओधनी' का विशेष स्थान है। यह मुख्य रूप से महिलाओं द्वारा किया जाने वाला एक अनुष्ठानिक नृत्य है, जिसमें नर्तकी भाव-विभोर होकर समाधिस्थ हो जाती है। इस नृत्य का मूल उद्देश्य आध्यात्मिक या अलौकिक शक्ति की प्राप्ति माना जाता है। इसके पश्चात ओजापाली और मनसा पूजा से संबंधित नृत्यों की समृद्ध परंपरा आती है। ओजापाली पौराणिक गाथाओं को कहने की एक अनूठी कला है, जिसमें कलाकार नृत्य, गायन और अभिनय के समन्वय से कथा वाचन करते हैं। वहीं 'धुलिया नृत्य' अपनी विशिष्ट शैली के लिए प्रसिद्ध है, जिसमें कलाकार कौशल का प्रदर्शन करते हुए ढोल के साथ नृत्य करते हैं, जो ग्रामीण जीवन की जीवंतता को दर्शाता है।

असम की विभिन्न जनजातियों की भी अपनी गौरवशाली नृत्य परंपराएँ हैं। इनमें मणिपुरियों का 'लाई-हाराओबा', लुशाई (मिज़ो) जनजाति का 'बाँस नृत्य' (चेराव) और बोड़ो समुदाय का 'खेराई' व 'बागुरुम्बा' अत्यंत उल्लेखनीय हैं। बागुरुम्बा विशेष रूप से वसंत ऋतु के आगमन पर बोड़ो युवतियों द्वारा किया जाने वाला एक उल्लासपूर्ण लोक नृत्य है। इनके अतिरिक्त 'भोरताल', 'देवदासी' और 'झूमुर नृत्य' भी असम की सांस्कृतिक विविधता और विभिन्न समुदायों की अनूठी पहचान को रेखांकित करते हैं।

कृषि प्रधान जनजीवन में धान की बुआई, रोपाई और कटाई जैसे कृषि कार्यों के साथ 'श्रम-नृत्य' की एक अटूट परंपरा जुड़ी है। इन कार्यों के दौरान शरीर की स्वतः

स्फूर्त और लयबद्ध मुद्राएँ जब लोक-गीतों के साथ मिलती हैं, तो श्रम भी माधुर्य में बदल जाता है। इन गीतों का मुख्य उद्देश्य कार्य की गति और ताल के बीच सामंजस्य बिठाना है, जिससे थकान का अनुभव कम होता है और कार्य-दक्षता में वृद्धि होती है।असमिया लोक-जीवन में विभिन्न व्यवसायों और कार्यों के अनुरूप गीतों की एक विस्तृत शृंखला है; जैसे धान कूटते समय गाए जाने वाले 'ढेकी गीत', सूत कातते समय 'जतर गीत'तथा ग्वालों, नाविकों और मछुआरों के अपने विशिष्ट गीत। इसके अतिरिक्त, आध्यात्मिक चेतना से ओत-प्रोत 'टोकारी गीत' भी प्रचलित हैं। संक्षेप में,यहाँ जैसा कर्म होता है, गीत और नृत्य भी उसी के अनुरूप एक नया और सजीव रूप धारण कर लेते हैं ।

इन नृत्य-गीतों के अतिरिक्त लोक-साहित्य के एक अत्यंत लोकप्रिय अंग 'जिह्वा-परिवर्तक' (Tongue Twisters) या अनुप्रासात्मक लघु कविताओं का उल्लेख करना भी प्रासंगिक है। इन कविताओं की विशेषता यह है कि इनके उच्चारण में जिह्वा को अत्यधिक तीव्रता से घुमाना पड़ता है। इनमें ध्वन्यात्मक साम्यता वाले शब्दों की प्रधानता होती है, जो एक या एक से अधिक पंक्तियों के हो सकते हैं। एक ही व्यंजन वर्ण की निरंतर आवृत्ति के कारण इन्हें द्रुत गति से बार-बार दोहराना काफी कठिन होता है (जैसे-'लाई पुली लराई रूलों)।

लोकमान्यता के अनुसार, इस प्रकार के कठिन उच्चारण के अभ्यास से बच्चों की जिह्वा लंबी और कोमल होती है। यह न केवल बच्चों के मनोरंजन का साधन है, बल्कि उनके शब्द-उच्चारण की स्पष्टता और वाक-पटुता के लिए एक प्रभावी भाषाई अभ्यास भी है। पीढ़ियों से वाचिक परंपरा के रूप में जीवित इन अनमोल रचनाओं का वर्तमान में लिपिबद्ध और संरक्षित किया जाना नितांत आवश्यक है।

8.6.5 खेल-कूद:

खेल-कूद केवल शारीरिक गतिविधि नहीं, बल्कि एक जीवंत सामाजिक व्यवस्था है, क्योंकि इसकी पूर्णता सामूहिक सहभागिता में निहित है। जनसाधारण के जीवन के अभिन्न अंग के रूप में खेल आज आधुनिक संस्कृति का एक विशिष्ट आयाम रच रहे हैं। तात्विक दृष्टि से देखें, तो खेल एक जीवंत 'नाटक' के समान है, जहाँ खिलाड़ी अभिनेता की भूमिका में होते हैं और उनकी लयबद्ध गति नृत्य का आभास कराती है। कई पारंपरिक खेलों में गीतों का समावेश इनके आकर्षण को और बढ़ा देता है।

प्रत्येक खेल के अपने निर्धारित नियम होते हैं, जिनमें से अधिकांश लोक-विश्वासों और परंपराओं पर आधारित हैं। उदाहरण के तौर पर, असम में 'कौड़ी' खेलने की परंपरा मुख्य रूप से बोहाग बिहू के दौरान प्रचलित है; कभी-कभी इनका उपयोग भविष्य-कथन या शकुन जानने के लिए भी किया जाता है। भोगाली बिहू के दौरान ग्रामीण क्षेत्रों में

खेले जाने वाले खेलराज्य की समृद्ध संस्कृति का हिस्सा है। प्रमुख खेलों में 'धोपखेल' (एक प्रकार का रग्बी), 'मोह-जुज' (भैंस की लड़ाई), 'टेकेली भोंगा' (मटका फोड़), 'कुकुरा जुज' (मुर्गे की लड़ाई) आदिशामिल हैं। ये खेल शारीरिक क्षमता, सामुदायिक एकता और मनोरंजन का मिश्रण हैं। लिंग-आधारित खेलों की भी अपनी विशेषता है, जहाँ गीतों के साथ खेले जाने वाले खेल प्रायः लड़के और लड़कियों तक सीमित होते हैं। लोक-साहित्य के अन्य अंगों-जैसे बिहू गीत या लोककथाओं-की भाँति खेलों के भी अनेक वैविध्यपूर्ण रूप हैं, जो गहन शोध की माँग करते हैं। वस्तुतः किसी भी जाति के खेल और मनोरंजन के तरीके उसकी शक्ति, साहस, वीरता, कार्यक्षमता और सामूहिक चेतना के परिचायक होते हैं।

स्मरणीय बिंदु:

1. असम के लोक उत्सव तीन प्रकार के होते हैं—कृषि-आधारित, धार्मिक तथा जन्म-मृत्यु-विवाह से जुड़े सामाजिक उत्सव।
2. कृषि-आधारित उत्सव (जैसे बिहू, बैसाग)सबसे प्रमुख हैं, क्योंकि अधिकांश लोग कृषक हैं और ऋतुओं के अनुसार नृत्य-गीत के साथ इन्हें मनाया जाता है।
3. धार्मिक उत्सवों में विविधता और सहिष्णुतादिखाई देती है—दुर्गा पूजा, ईद, क्रिसमस आदि के साथ-साथ शिव, प्रकृति और स्थानीय देवताओं की पूजा भी की जाती है।
4. जीवन-संस्कार (जन्म, विवाह, मृत्यु)सामाजिक एकता के प्रतीक हैं, जिनमें पूरे समुदाय की सहभागिता और पारंपरिक अनुष्ठानों का पालन होता है।
5. लोक-नृत्य, गीत और परंपराएँ (जैसे बिहू नृत्य-गीत, देओधनी, ओजापाली) असम के सांस्कृतिक जीवन, आनंद, श्रम और आध्यात्मिकता को अभिव्यक्त करते हैं।

8.7 असम में लोकसंस्कृति का वर्तमान संदर्भ:

भौगोलिक दृष्टि से असम भारत के उत्तर-पूर्वी क्षेत्र में स्थित एक अत्यंत समृद्ध और विविधता से युक्त राज्य है। यह क्षेत्र समशीतोष्ण जलवायु, घने वन, पर्वत, नदियाँ तथा उपजाऊ भूमि से परिपूर्ण है। इन प्राकृतिक विशेषताओं और संतुलित पारिस्थितिकी ने यहाँ की लोक-संस्कृति के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।असम चारों ओर से पहाड़ियों से घिरा हुआ है, जिसके कारण यह भारत के विस्तृत मैदानी भूभाग से कुछ हद तक पृथक प्रतीत होता है। इस भौगोलिक विशिष्टता ने जहाँ इसकी संस्कृति को एक स्वतंत्र पहचान प्रदान की, वहीं भारतीय आर्य सभ्यता का प्रभाव भी यहाँ गहराई से परिलक्षित होता है।

असम की संस्कृति केवल आर्य परंपरा तक सीमित नहीं है, बल्कि इस पर चीनी-तिब्बती, बर्मी (म्यांमारी) तथा मंगोलियाई और ऑस्ट्रिक सभ्यताओं का भी व्यापक प्रभाव पड़ा है। इन विभिन्न सभ्यताओं से जुड़े जनजातीय समूह समय-समय पर यहाँ आकर बसते गए, जिसके परिणामस्वरूप एक समन्वित और बहुरंगी सांस्कृतिक परंपरा का निर्माण हुआ। इस निरंतर जातीय प्रवाह और सांस्कृतिक आदान-प्रदान ने असम की लोक-संस्कृति को गहराई, विविधता और विशिष्टता प्रदान की।

इतिहास साक्षी है कि असम ने विभिन्न कालों में अनेक आक्रमणों, प्रवासों और सांस्कृतिक प्रभावों को आत्मसात किया है। अनेक बाहरी जातियाँ यहाँ आकर बसीं, जिनकी परंपराओं, भाषाओं और जीवन-शैली ने स्थानीय संस्कृति को प्रभावित किया। विशेषतः अहोम शासन, मुगल काल तथा ब्रिटिश उपनिवेशवाद ने असम की सांस्कृतिक संरचना को नया आयाम प्रदान किया।ब्रिटिश शासनकाल में असम के सामाजिक, धार्मिक और आर्थिक जीवन में व्यापक परिवर्तन हुए। इसी काल में ईसाई मिशनरियों का आगमन हुआ, जिन्होंने शिक्षा, धर्म-प्रचार के माध्यम से जनजातीय समाज में प्रवेश किया। इसके प्रभाव में आकर कुछ जनजातीय समुदायों में धर्मांतरण हुआ। उन्होंने अपने पारंपरिक धर्म को छोड़कर ईसाई धर्म अंगीकार कियाजिसके परिणामस्वरूप उनकी सांस्कृतिक संरचना, लोक-परंपराऔर लोक-जीवन की मूल पहचान में परिवर्तन आया।

अंग्रेजी शासन काल में अंग्रेजों ने अपनी शासन-व्यवस्था के विस्तार के लिए सड़कों का निर्माण, रेल लाइन बिछाना, डाक सेवा जैसी कई सुविधाओं का प्रारंभ किया। इसके प्रभाव सेअसम का भारत के अन्य भागों से संपर्क आसान हुआ। लोगों का आवागमन भी आसान हुआ। भारत के विभिन्न हिस्सों-बंगाल, बिहार, ओडिशा, पंजाब, राजस्थान आदि राज्यों से लोग असम में आकर बसने लगे। (हालाँकी इसके पीछे कई अन्य कारण भी हैं)। परिणामस्वरूप असमिया समाज मेंबंगाली, बिहारी, मारवाड़ी, पंजाबी, गोर्खा, मुस्लिम, सिख, जैन औरइसाईसमुदायोंका समावेश हुआ, जिससे राज्य की सामाजिक संरचना और विविधतापूर्ण बनने से साथ-साथ यहाँबहुजातीय, बहुभाषिक और बहुधार्मिक समाजका निर्माण हुआ। इन बाहरी संपर्कों ने जहाँ असम की लोक संस्कृति में नए तत्व जोड़े, वहीं स्थानीय परंपराओं के साथसांस्कृतिक-समन्वय की प्रक्रिया भी तेज हुई। लोक नृत्य, लोकगीत, परिधान, भोजन, त्योहार, स्थापत्य कला और जीवनशैली में परंपरा और आधुनिकता का सम्मिश्रण दिखाई देने लगा। उदाहरणस्वरूप, असम के लोक उत्सव-बिहू, अली-आई-लिगांग, कार्बी-आंगलोंग महोत्सव, डिमासा बुशुआदि-आज भी अपनी मौलिकता को बनाए रखते हुए आधुनिक रूप में मनाए जाते हैं।

निष्कर्ष के तौर पर हम कह सकते हैं कि असम की लोक-संस्कृति आजपरंपरा और आधुनिकता के संगमका जीवंत उदाहरण है। बाहरी प्रभावों और ऐतिहासिक परिवर्तनों के बावजूद असमवासियों ने अपनी सांस्कृतिक पहचान को संरक्षित रखा है। यहाँ की लोक संस्कृति निरंतर परिवर्तनशील होते हुए भी अपने मूल लोक-स्वर, सामूहिक

चेतना और अस्मिता के साथ जीवित है, जो इसकी सबसे बड़ी विशेषता है। असम की लोक संस्कृति आज भीअतीत की गूँज और वर्तमान की चेतना-दोनों को समान रूप में समेटे हुए निरंतर आगे बढ़ रही है।

अपनी प्रगति जाँचें:

प्रश्न 1.सबसे पहले किसने और कब Culture शब्द का प्रयोग किया था?

प्रश्न 2. संस्कृति के प्रकार समझाइए ।

प्रश्न 3. मैथ्यु अर्नोल्ड ने संस्कृति को कैसे परिभाषित किया है?

प्रश्न4. असम की भौतिक लोक संस्कृतिक विशेषताओं के बारे में लिखिए।

8.8 सारांश :

संस्कृति किसी समाज की आत्मा होती है, जो उसके विचार, आचार, विश्वास, परंपरा, कला, व्यवहार और जीवन शैली में अभिव्यक्त होती है। संस्कृति की परिभाषा से यह स्पष्ट होता है कि यह केवल भौतिक वस्तुओं तक सीमित नहीं है, बल्कि समाज की मानसिक, नैतिक, धार्मिक और सामाजिक अभिव्यक्तियों का भी दर्पण है।संस्कृति के प्रकारों में भौतिक और अभौतिक संस्कृति का वर्गीकरण समाज के विकास की दिशा को समझने में सहायक होता है। भौतिक संस्कृति जहाँ जीवन के ठोस पक्षों-जैसे तकनीक, वस्त्र, भवन, और उपकरणों-का प्रतिनिधित्व करती है, वहीं अभौतिक संस्कृति मान्यताओं, मूल्यों, विश्वासों और विचारधाराओं को दर्शाती है।लोक संस्कृति किसी भी समाज की सबसे प्राचीन और जड़ से जुड़ी हुई अभिव्यक्ति है। यह लोगों के दैनिक जीवन, रीति-रिवाज, उत्सव, गीत, नृत्य, कथाएँ और लोककला में निहित होती है। लोक संस्कृति का वर्गीकरण क्षेत्रीय, जातीय और धार्मिक आधार पर किया जा सकता है, जिससे किसी समाज की विविधता और समृद्धि का पता चलता है।असम की लोक संस्कृति इस दृष्टि से अत्यंत विशिष्ट है। यहाँ की संस्कृति में आर्य, मंगोल, द्रविड़ और तिब्बती प्रभावों का सुंदर संगम दिखाई देता है। भौगोलिक विविधता, जनजातीय समूहों की उपस्थिति और ऐतिहासिक संपर्कों ने असम को एक अद्वितीय सांस्कृतिक स्वरूप प्रदान किया है। असम की लोक कला, संगीत, नृत्य, वेशभूषा, त्योहार और भाषा इस मिश्रण की झलक प्रस्तुत करते हैं। वर्तमान के समय में असम की लोक संस्कृति आधुनिकता, औद्योगिकीकरण और वैश्वीकरण के प्रभाव में परिवर्तनशील हुई है। यद्यपि बाहरी संस्कृतियों के प्रभाव से

कुछ पारंपरिक रूपों में ह्रास देखा गया है, फिर भी असमियासमाज अपनी मूल सांस्कृतिक अस्मिता को बनाए रखने के लिए सतत प्रयत्नशील है।

निष्कर्ष के तौर पर कहा जा सकता है कि असम की लोक संस्कृति न केवल उसकी पहचान का प्रतीक है, बल्कि यह भारत की बहुरंगी सांस्कृतिक विरासत का भी अभिन्न हिस्सा है। इसका संरक्षण और संवर्धन आधुनिक युग में सांस्कृतिक निरंतरता बनाए रखने के लिए अत्यंत आवश्यक है।

8.9 प्रगति विवरण (केवल रूपरेखा):

प्रश्न 1का उत्तर : ई. 1865 में एडवर्ड टायलर ने सबसे पहले Cultura शब्द का प्रयोग किया था।

प्रश्न 2का उत्तर : संस्कृतियोंकेप्रकार (8.4) पढ़िए।

प्रश्न 3का उत्तर : मैथ्यूअर्नोल्ड(Matthew Arnold)केअनुसार, 'मधुरता और प्रकाश की विशेषताही संस्कृतिहै।'

प्रश्न 4का उत्तर: असमकीलोक-सांस्कृतिकपरिचय (8.5) के 8.5.1 पढ़िए।

8.10 अधिक जानने के लिए पढ़े:-

- क्रोएबर, ए. एल., एवं क्लुखॉन, सी. *ए क्रिटिकल रिव्यू ऑफ कॉन्सेप्ट्स एंड डेफिनिशन्स.* हार्वर्ड यूनिवर्सिटी, कैम्ब्रिज।
- विद्यार्थी, एल. पी. *आर्ट एंड कल्चर ऑफ नॉर्थ-ईस्ट इंडिया (एन ओल्ड एंड रेयर बुक).* प्रकाशन प्रभाग, भारत सरकार।
- मालिनोव्स्की, ब्रोनिस्लाव. (प्रकाशन वर्ष अनुपलब्ध).*ए साइंटिफिक थ्योरी ऑफ कल्चर एंड अदर एस्सेज.* द यूनिवर्सिटी ऑफ नॉर्थ कैरोलाइना प्रेस, चैपल हिल।
- गोगोई, लीला. *असमर संस्कृति.* बनलता प्रकाशन, डिब्रूगढ़।
- शर्मा, एन. सी., एवं साहारिया, के. सी. (संपा०).*अक्समर संस्कृति-समिक्षा.* चंद्र प्रकाश, गुवाहाटी।
- हैविलैंड, विलियम ए..*कल्चरल एंथ्रोपोलॉजी.* हारकोर्ट ब्रेस कॉलेज पब्लिशर्स, यूनिवर्सिटी ऑफ वर्मोंट।
- अर्नोल्ड, मैथ्यू.*कल्चर एंड एनार्की.* ऑक्सफोर्ड वर्ल्ड्स क्लासिक्स।
- होनिगमन, जॉन जे.*हैंडबुक ऑफ सोशल एंड कल्चरल एंथ्रोपोलॉजी.* रैंड मैकनैली एंड कंपनी, शिकागो।

- बोराह, देबोजीत. (संपा०). *उत्तर पूर्वांचलोर जनगोष्ठीय लोक-संस्कृति.* एम. आर. पब्लिकेशन, गुवाहाटी।
- वर्मा, राजेश. *उत्तर-पूर्व भारत का इतिहास.* मित्तल पब्लिकेशन, नई दिल्ली।

8.11 अभ्यास-प्रश्न:

(क) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में लिखिए :

1. 'संस्कृति' शब्द का अंग्रेजी प्रतिशब्द क्या है?
2. "किसी भौगोलिक वातावरण के भीतर मानव प्रकृति का विकास ही संस्कृति है"- यह कथन किसका है?
3. मैथ्यू अरनॉल्ड के अनुसार संस्कृति क्या है?
4. "मानव का नैतिक, आध्यात्मिक और बौद्धिक विकास ही संस्कृति है" - यह बात किसने कही थी?
5. भौतिक संस्कृति क्या है?

(ख) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

1. संस्कृति की परिभाषा लिखते हुए इसके प्रमुख तत्वों की व्याख्या कीजिए।
2. असम की लोक-संस्कृति का परिचय दीजिए ।
3. असम की भौतिक लोकसंस्कृति का स्वरूप समझाइए ।
4. असम की लोक संस्कृति पर भौगोलिक, सामाजिक एवं ऐतिहासिक परिस्थितियों के प्रभाव का विश्लेषण कीजिए।
5. संस्कृति के प्रकारों पर चर्चा करते हुए भौतिक एवं अभौतिक संस्कृति के बीच अंतर स्पष्ट कीजिए।
6. असम में लोक संस्कृति की वर्तमान स्थिति पर टिप्पणी लिखिए ।



This document was created with the Win2PDF “Print to PDF” printer available at

https://www.win2pdf.com

This version of Win2PDF 10 is for evaluation and non-commercial use only.
Visit https://www.win2pdf.com/trial/ for a 30 day trial license.

This page will not be added after purchasing Win2PDF.

https://www.win2pdf.com/purchase/